# मेरा मसीहा
# डा. नन्द लाल तिवाड़ी

जीवन प्रकाश 'जीवन'

मेरा मसीहा, मेरा जीवन रक्षक, मेरा प्राण-त्राता— डा. नन्द लाल तिवाड़ी, जयपुर जिन्होंने असाध्य को साध्य कर दिखाया और मुझे काल-कवलित होने से बचाया।

मैं कैंसर जैसे घातक रोग से पीड़ित था। न जाने यह मूज़ी मर्ज कब से अन्दर ही अन्दर पनप रहा था परन्तु इसके विकराल प्रहार का ज्ञान मुझे सन् 1987 में हुआ जब इस रोग ने मेरे शरीर में गहरी जड़ें जमा लीं। इस रोग का केन्द्र प्रास्टेट ग्रंथि थी। मुझे पेशाब के साथ खून और पस आने लगी। पीड़ा असह्य हो गई। शरीर दिनों दिन क्षीण होता चला गया।

मेरा सुपुत्र क्रांति दीपक M.B.B.S., M.D. डाक्टर है और नई दिल्ली में प्रैक्टिस करता है। वह मुझे अपने साथ दिल्ली ले गया और अखिल भारतीय आयुविज्ञान संस्थान में मुझे दिखाया। वहां मेरे कई तरह के टैस्ट किए गए। औषधियों का सेवन भी करता रहा परन्तु कुछ लाभ न हुआ।

मेरा छोटा सुपुत्र विप्लव इंजिनीयर है। उन दिनों वह चण्डीगढ़ में था। उसके एक मित्र 'राय' ने बताया कि जयपुर के डा. नन्द लाल तिवाड़ी ने इस भयंकर बीमारी का इलाज ढूंढ निकाला है और अनेक कैंसर रोगी डा. तिवाड़ी के इलाज से रोग-मुक्त हो गए हैं। उसने पंजाबी के प्रसिद्ध लेखक करतार सिंह दुग्गल का उदाहरण दिया। वह कैंसर रोग से पीड़ित था। परन्तु डा. तिवाड़ी के इलाज से वह अब पूरी तरह स्वस्थ है।

मेरा बड़ा पुत्र डा. क्रांति दीपक मेरा इलाज अखिल भारतीय आयुविज्ञान संस्थान में ही करवाना चाहता था। वहां के डाक्टरों ने आप्रेशन के लिए 12 मई, 1989 की तारीख निश्चित की परन्तु परमात्मा को कुछ और ही मंजूर था। आयुविज्ञान संस्थान के डाक्टरों ने अपनी मांगें मनवाने के लिए एकाएक हड़ताल कर दी और परिणामतः मेरा आप्रेशन न हो सका।

इस ओर से निराश होकर मेरे सुपुत्र क्रांति दीपक ने डा. नन्द लाल तिवाड़ी के पास जयपुर जाने का निश्चय किया। वह 13 मई, 1989 को जयपुर गया और डाक्टर तिवाड़ी को मिला। डा. तिवाड़ी को जब पता चला कि क्रांति दीपक स्वयं भी डाक्टर है तब उसने एक महीने की दवाई दे दी और एक पैसा तक न लिया। मैंने 14 मई, 1989 को डा. तिवाड़ी की दवाई का सेवन शुरु किया। उस औषधि ने जादू जैसा असर किया और स्वास्थ्य लाभ होने लगा। उसके बाद हर महीने वहा से दवाई मंगवाने लगे। एक महीने की दवाई का मूल्य 300/- रुपए है परन्तु हमें डा. तिवाड़ी नि:शुल्क दवाई देते हैं। दवाई का सेवन करते हुए मुझे सवा साल होने को आया है। इस समय मैं अपने आपको पूरी तरह स्वस्थ अनुभव करता हूं। परन्तु डा. तिवाड़ी का परामर्श है कि मैं कुछ महीने और दवाई का सेवन करूं।

मैं और मेरे परिवार के सभी सदस्य डा. तिवाड़ी के अत्यन्त कृतज्ञ हैं। मेरे लिए तो वह मसीहा सिद्ध हुए हैं। उनकी औषधि कैंसर रोगियों के लिए संजीवनी है। इतना महान कार्य सम्पन्न करने पर भी डा. तिवाड़ी में रंच मात्र अभिमान नहीं है। वे अपनी इस खोज का श्रेय अपने आपको नहीं देते अपितु इसे ईश्वर की अनुकंपा मानते हैं।

कैंसर का यह सफल उपचार डा. तिवाड़ी की अनेक वर्षों की मेहनत और खोज का परिणाम है। इस औषधि के लिए वे अनेक वर्षों तक आसाम के जंगलों में घूमते रहे और वहां की जड़ी बूटियों पर रिसर्च करते रहे।

डा. नन्द लाल तिवाड़ी का जन्म राजस्थान के नागौर मंडलान्तार्गत नीमड़ी कलां नामक गांव में जनवरी, 1940 में हुआ। उन्होंने वैद्य विशारद की परीक्षा उत्तीर्ण की और कैंसर का उपचार ढूंढने में लग गए। सन् 1959 में उनका विवाह श्रीमती राज दुलारी से हुआ। उनके तीन पुत्र और एक पुत्री सन्तान हैं।

डा. तिवाड़ी कैंसर के निराश रोगियों के लिए ईश्वर तुल्य हैं। उनका जीवन अत्यन्त सादा और स्वभाव बहुत मृदुल है। निर्धन निःसहाय रोगियों से वे दवाई का मूल्य नहीं लेते। कई अवसरों पर वे उन्हें आने जाने का किराया भी अपनी जेब से देते हैं। कुछ समय से डा. रूप सिंह, M.B.B.S., M.D., N.D. डा. तिवाड़ी के साथ सहायक के रूप में काम कर रहे हैं। वह 29-30 वर्ष के युवक हैं और उन्होंने भी कैंसर की रोकथाम के लिए काम करने और रोग-पीड़ित मानवता को पीड़ा-मुक्त करने का व्रत लिया है और इसीलिए अपनी सेवाएं डा. तिवाड़ी को समर्पित की हैं।

उन्होंने अपनी खोज के बारे में राष्ट्र की सभी संबंधित संस्थाओं को सूचित किया। टाटा मैमोरियल हस्पताल बम्बई ने उन्हें इस रिसर्च में सहयोग देने का आश्वासन दिया है।

अपने जीवन रक्षक डा. तिवाड़ी के प्रति मेरा रोम रोम कृतज्ञ है। मेरे अन्तस् से हर समय यही दुआ निकलती है कि डा. नन्द लाल तिवाड़ी दीर्घ-जीवी हों और अपनी इस रिसर्च को और आगे बढ़ाते हुए दीर्घकाल तक रोग-पीड़ित मानव-समाज की पीड़ा हरते रहें। उनका नाम और यश देश काल की सीमाओं को लांघ कर चिरकाल तक सारी दुनिया में देदीप्यमान रहेगा।

—०—

## मस्ती की हस्ती

मस्ती की हस्ती तू मैखाने से पूछ,
अधरों की धड़कन तू पैमाने से पूछ,
किस तरह जलते हैं पागल प्यार में,
शमां से, जीवन से, परवाने से पूछ।